पं. स्थाणुदत्त पाण्डुलिपि अनुभाग, कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय- एक परिचय

डॉ. विनोद कुमार शर्मा
सहायक आचार्य,
संस्कृत प्राच्य विद्या संस्थान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

शोधसार - पंडित स्थाणुदत्त जी ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की स्थापना के आरम्भ से ही पांडुलिपियों का संग्रह करना शुरू कर दिया था। पं. स्थाणुदत्त जी ने अनेक पांडुलिपियां स्वयं की राशि से ही खरीदी थी। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने 1972- 73 से उन्हें अनुदान राशि देना आरम्भ किया, वर्तमान में यहाँ अब National Manuscript Mission की वित्तीय सहायता से MRC और MCC दोनों प्रोजेक्ट चल रहे है। MRC का अर्थ Manuscript Resource Centre तथा MCC का अर्थ Manuscript Cure Center है। वर्तमान में यहाँ १६००० से अधिक पांडुलिपियाँ है। प्रस्तुत शोध पत्र में पंडित स्थाणुदत्त जी के पांडुलिपियों के रक्षार्थ समर्पण व पं. स्थाणुदत्त पाण्डुलिपि केन्द्र कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय के प्रमुख कार्यों का विवेचन किया गया है।

कूटशब्द- पान्डुलिपि, पंडित स्थाणुदत्त, प्राच्य विद्या, MRC, MCC

प्रस्तावना - हरियाणा की भूमि शस्यश्यामला होने के साथ-साथ सांस्कृतिक सम्पदा से भी सुसम्पन्न है। यह प्रदेश सांस्कृतिक समृद्धि की सम्वाहिका पांडुलिपियों का पुष्कल भंडार है वर्तमान में हरियाणा में लगभग ३०००० पांडुलिपियों संकलित की गयी है एवं बहुत सी पांडुलिपियाँ व्यक्तिगत संरक्षण में होने की सम्भावना है। सर्वाधिक पांडुलिपियाँ कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय के जवाहर लाल नेहरू पुस्तकालय के पं.स्थाणुदत्त पाण्डुलिपि केन्द्र में संकलित है, जिनकी संख्या लगभग १६००० है इसके अतिरिक्त हरियाणा राज्य अभिलेखागार, क्षेत्रीय अभिलेखागार, गुरुकुल झज्झर, जैननेंद्र गुरुकुल पंचकूला, दिगम्बर बड़ा जैन मंदिर सोनीपत, पाणिनि महाविद्यालय रेवली सोनीपत, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय कैथल में भी पांडुलिपियाँ संकलित है।१

पं.स्थाणुदत्त जी का व्यक्तित्व- पं.स्थाणुदत्त का जन्म २५ अगस्त १९०३ को थानेसर में राजपुरोहित परिवार में हुआ। जन्म के पश्चात आपके माता पिता ने इनको स्थानेश्वर महादेव को समर्पित कर दिया व नामकरण

भी शिव के नाम पर स्थाणुदत्त रख दिया। पं. स्थाणुदत्त सम्पूर्ण हरियाणा के संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पण्डित तथा आचार्य के रूप में जन-जन की श्रद्धा और सम्मान के पात्र बने, आप व्याकरण साहित्य, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि विषयों के ज्ञाता थे। आपने व्याकरणशास्त्र का अध्ययन भिक्षाराम शास्त्री से प्राप्त किया, आप व्याकरण के प्रामाणिक लेखक थे। कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय की स्थापना के समय पं. स्थाणुदत्त जी पंजाब शिक्षा विभाग में थे। पं.स्थाणुदत्त को १९६७-१९६८ में भाषा विभाग हरियाणा ने प्रथम विद्वान के रूप में सम्मानित किया६ । पं.स्थाणुदत्त जी संस्कृत, हिन्दी, पंजाबी, बंगाली, गुजराती, मराठी आदि के प्रकाण्ड पण्डित थे तथा तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, शारदा आदि सभी लिपियों को भली भांति पढ़ लेते थे । अनेक विद्वानों ने आपसे लिपियों के अध्ययन व अनुसन्धान में दीक्षा प्राप्त की।

तत्कालीन संस्कृत विभागाध्यक्ष डा. गौरी शंकर जी ने पाण्डुलिपि के लिए पं. स्थाणुदत्त जी को कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय बुलवाया और कुलपति जी द्वारा नियुक्त करवाया गया। क्योंकि पं. स्थाणुदत्त जी की विद्वता के आगे उस समय शंकराचार्य जी भी नतमस्तक थे ।

स्थाणुदत्त जी ने पहली पाण्डुलिपि मद्रास के रेलवे स्टेशन पर अपने कानों की मुर्कियाँ बेचकर खरीदीं थी। उन्होंने गीता भवन में सबसे पहले ३०० पाण्डुलिपियां इकठ्ठी की जिसनें कुछ पांडुलिपियों उनकी परम्परागत थी, कुछ लाहौर से, कुछ रोहतक से और कुछ भिक्षाराम शास्त्री जी के परिवार से प्राप्त की थी। वे अनेक भाषायें पढ़-लिख लेते थे, इसलिए उन्होंने संपूर्ण भारत से पांडुलिपियों का संग्रह करना शुरू कर दिया क्योंकि तत्कालीन कुलपति जी ने उनको कहा था की बनारस विश्वविद्यालय में जितनी पांडुलिपियां हैं तथा पुणे में जितनी पांडुलिपियां है उसी प्रकार दूसरा स्थान कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का होना चाहिए। क्योंकि बनारस विश्वविद्यालय के बाद कुरुक्षेत्र संस्कृत विश्वविद्यालय को दूसरे स्थान पर देखने का सपना माननीय राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद जी का था। पं. स्थाणुदत्त जी नें इधर उधर भ्रमण करते हुये ५००० दुर्लभ पांडुलिपियों का संग्रह १९२१ से १९२४ तक किया। उत्तर भारत में बनारस विश्वविद्यालय के बाद कुरुक्षेत्र संस्कृत विश्वविद्यालय के अतिरिक्त पांडुलिपियों का इतना संग्रह कही भी नही था। पं. स्थाणुदत्त जी नें कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पाण्डुलिपि संग्रहण को लेकर तीन योजनायें बनाई - 1. दान में लेना २. उपयोगिता देखकर खरीदना 3. पाण्डुलिपि हमें दे दो जरूरत पड़ने पर वापस दे देंगे।

पंडित स्थाणुदत्त केन्द्र व कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय - पंडित स्थाणुदत्त जी ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की स्थापना के आरंभ से ही पांडुलिपियों का संग्रह करना शुरू कर दिया था। तब तक स्थाणुदत्त जी ने अनेक

पांडुलिपियां स्वयं की राशि से ही खरीदी ली थी। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने १९७२-१९७३ से उन्हें अनुदान राशि देना आरंभ किया जिससे उन्होनें २०८६ तक ५००० पांडुलिपियां पूर्ण तथा २००० पांडुलिपियां अपूर्ण प्राप्त करके उस समय पुणे और बनारस को पीछे छोड़ उत्तर भारत में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को प्रथम स्थान दिलवाया था इसलिए प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी ने उन्हें १९८० में पद्मश्री से सम्मानित किया था। उन्हें अन्य पुरस्कारों में शंकराचार्य सम्मान व अनेक सम्मान प्राप्त हुए।

पं. स्थाणुदत्त जी ने १९८६ तक काम किया। वो आठ बार विश्वविद्यालय को निवृति पत्र दे चुके थे किन्तु विश्वविद्यालय उनको छोड़ना नहीं चाहता था, वे वृद्ध हो चुके थे क्योंकि १९६० में व्याख्याता के पद से सेवानिवृत होकर वे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आए थे। १९८७ में पंडित जी नें तत्कालीन कुलपति जी से आग्रह करके सेवानिवृति प्राप्त कर ली। तत्पश्चात उनके पुत्र पिनाकपाणि जी को पांडुलिपि संरक्षण के कार्य में लगा दिया किन्तु दुर्भाग्यवश अधरंग होने के कारण २८ अप्रैल १९८८ को पड़ित स्थाणुदत्त जी की मृत्यु हो गई और पिनाकपाणि जी की २००१ में कैंसर के कारण मृत्यु हो गई।

कुछ समय तक दिलीप सिंह जी ने पांडुलिपि विभाग को संभाला किन्तु ज्यादा समय तक सम्भाल नहीं पाये। परिणामस्वरूप पाण्डुलिपि विभाग बन्द कर दिया गया। २००३ में संस्कृत विभाग के डा. सुरेन्द्र मोहन मिश्र जी ने राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के तहत इस विभाग को खुलवाया। उन्होंने २००३ में MRC प्रोजक्ट शुरु किया जिसमें पाण्डुलिपियों को सम्पूर्ण हरियाणा से एकत्र करना था। फिर २०११ में MCC प्रोजेक्ट शुरु किया जिसका उद्देश्य पांडुलिपियों का संरक्षण करना था। मिश्रा जी ने पांडुलिपियों के संरक्षण व संवर्धन से संबंधित व लिपि शास्त्र से संबंधित अनेक सम्मेलनों व कार्यशालाओं का आयोजन किया व संपूर्ण हरियाणा व आसपास के क्षेत्र से लगभग १०००० पांडुलिपियां लाकर संग्रहित की। २०२२ तक डॉक्टर सुरेंद्र मोहन मिश्रा जी ने कार्य किया किया। वर्तमान में यहां लगभग १६००० के पांडुलिपियाँ है जो कि देवनागरी, हरियाणवी, गुरुमुखी, बंगाली, उर्दू, फारसी, शारदा तथा अरबी लिपियों में लिखे हुए है। अलंकार, इतिहास, उपनिषद, कथा-कहानी, कर्मकांड, काव्य, स्तोत्र, कोष, छन्दशास्त्र, नीति, पुराण, भक्ति, भूगोल, मन्त्र, रामायण, महाभारत ,वेद ,वेदांग , वेदान्त , आयुर्वेद , दर्शन, व्याकरण आदि विषयों से सम्बन्धित है। इन पांडुलिपियों का परिचय पंडित स्थाणुदत्त द्वारा सम्पादित की गयी ग्रन्थ सूची भाग- १ व ग्रन्थ सूची भाग- २ में उपलब्ध है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हस्तलिखित ग्रन्थालय का नाम पंडित स्थाणुदत्त जीके नाम पर रखकर विश्वविद्यालय ने उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है।

१० अगस्त २०२२ से डॉ ललित कुमार गॉड जी समन्वयक के सान्निध्य में यह कार्य राष्टीय पाण्डुलिपि मिशन के तहत चल रहा है। अब भी MRC और MCC दोनों प्रोजेक्ट चल रहे है। MRC का अर्थ Manuscript Resource Centre तथा MCC का अर्थ Manuscript Cure Center है। संरक्षण के लिए हम अधिकतर आयुर्वेदिक विधियों का प्रयोग करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर ही एलोपैथिक विधियों का प्रयोग करते हैं क्योंकि केमिकल हस्तलिखित ग्रन्थों के लिए हानिकारक है। वर्तमान में इस केंद्र की पांडुलिपियों पर १० शोध छात्र अनुसंधान कार्य कर रहे हैं, आज भी हमारा पांडुलिपि केंद्र उत्तर भारत में प्रमुख स्थान पर है।

निष्कर्ष- पं. स्थाणुदत्त जी ने पांडुलिपियों के संरक्षण के समय महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, इन्होंने स्वयं के पैसे से पांडुलिपियां खरीदी, ऐसे महानुभावों के प्रयासों से व प्राच्य विद्या संस्थानों के प्रयासों से ही पांडुलिपियां संरक्षित हुई है व आज संपादन हेतु उपलब्ध है। प्राच्य विद्या संस्थानों के महत्त्वपूर्ण प्रयासों से ही रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्यों के शुद्ध संस्करण उपलब्ध है। प्राच्य विद्या संस्थानों के द्वारा किए गए अनुवाद कार्यों के कारण ही भारतीय ज्ञान का वैश्विक प्रसार सम्भव हुआ है।

१. Summaries of papers ,44th IOC 2008, page-581

२. श्री सुमेरचंद शास्त्री के सौजन्य से, प्राचीन पांडुलिपियों के पुरोधा पं. स्थाणुदत्त शर्मा – जीवन एवं अवदान, पृ.०९, लघु शोध निबन्ध-शैलजा मंजू, २००६ ,कुरुक्षेत्र वि.वि.

३. प्राचीन पांडुलिपियों के पुरोधा पं. स्थाणुदत्त शर्मा – जीवन एवं अवदान, पृ.-२६ ,लघु शोध निबन्ध-शैलजा मंजू, २००६ ,कुरुक्षेत्र वि.वि.

४. प्राचीन पांडुलिपियों के पुरोधा पं. स्थाणुदत्त शर्मा – जीवन एवं अवदान, पृ.१०, लघु शोध निबन्ध-शैलजा मंजू, २००६ ,कुरुक्षेत्र वि.वि.

५. हरियाणा की पांडुलिपियों के मनीषी पं. स्थाणुदत्त शर्मा,पृ.-०३, दलीप सिंह शास्त्री

६. प्राचीन पांडुलिपियों के पुरोधा पं. स्थाणुदत्त शर्मा – जीवन एवं अवदान, पृ.२६, लघु शोध निबन्ध-शैलजा मंजू, २००६ ,कुरुक्षेत्र वि.वि.

७. डॉ साधुराम शारदा ,हरियाणा साहित्यकार निर्देशिका, पृ.-२६५

८. श्रीमती मीरा शर्मा, वरिष्ठ संरक्षिका पं. स्थाणुदत्त शर्मा केन्द्र से साक्षात्कार से ज्ञात

९. डॉ रामेश्वर दत्त शर्मा , हरियाणा संस्कृत वृत्तम्, पृ.-११५